बड़े लोगों का बचपन - **फ्योडोर दोस्तोयेव्स्की** - महान रूसी लेखक

फ्योडोर दोस्तोयेव्स्की रूस में एक क्रूर काल में बड़े हुए.

वो छोटी लाश बेहद ठंडी और रहस्यमयी थी. उसमें से छोटी-छोटी गड़गड़ाहट और कर्कश आवाजें निकलती थीं, कि फेड़या कभी भी बिना डर के उसके पास से कभी नहीं गुजर सकता था. वो वहां इतनी बार जाता था कि उसके भाई उस स्थान को "फेड़या की लाश" बुलाते थे.

एक दिन जब वह लगभग 11 वर्ष का था, तब वो इलाके में खेल रहा था जब उसने एक आवाज सुनी "भेड़िया! भेड़िया!" भयभीत होकर वो पेड़ों के बीच से एक खुले मैदान की धूप की ओर तेज़ी से भागा. भागते समय उसने एक आदमी से मदद मांगी जो वहाँ हल जोत रहा था. आदमी ने तुरंत काम बंद किया और वो फेड़या की मदद के लिए उसके पास दौड़ा आया.

"सब ठीक है बेटा," उसने कहा. "देखो, यहाँ कोई भेड़िया नहीं है. किसी ने तुम पर कोई चाल चली है. देखो, यहाँ कोई भी तुम्हारा पीछा नहीं कर रहा है."

फेड़या ने अपने आँसू पोछे और वो अपने घर की ओर वापस जाने लगा. जिस व्यक्ति ने उससे इतनी दयालुता से बात की थी, वो उसके पिता के गुलामों में से एक था. क्या गुलामों में अन्य मनुष्यों की तरह ही भावनाएँ होती थीं?

।820 में, फेड़या का जन्म और पालन-पोषण हुआ. कोई धनी रूसी उस समय गाँव और उसमें रहने वाले सभी लोगों के साथ में भूमि का एक बड़ा टुकड़ा खरीद सकता था. गाँव वाले ज्यादातर भूखे और बीमार थे.

फेड़या के पिता एक बहुत ज़ालिम मालिक थे. वो अपने दासों को छोटे-छोटे अपराधों के लिए उन्हें कोड़े मारते थे और कभी-कभी उनकी पत्नी गुलामों की जान बख्शने के लिए पिता से याचना करती थीं. उस दोपहर फेड़या की गुलाम के साथ मुलाक़ात से पहले, उसे ऐसा कभी नहीं महसूस हुआ था कि किसी मनुष्य को कोड़े मरना क्रूर था.

जब वह बड़ा हुआ तो फेड़या - फ्योडोर दोस्तोयेव्स्की - को रूसी जमींदारों की क्रूरता के बारे में लिखने के लिए जेल भेजा गया. फ्योडोर के इस सुझाव से लोग भयभीत हुए कि गुलामों को मुक्त किया जाना चाहिए.

बहुत साल फेड़या अपने भाइयों और बहनों के साथ मास्को में ही रहा. उसके पिता मैरींस्की अस्पताल में डॉक्टर थे और परिवार के पास अस्पताल की एनेक्सी में रहने के लिए कमरे थे. दो वयस्कों और पांच बच्चों की देखभाल के लिए उनके यहाँ सात नौकर थे. चार नौकर रसोई में बड़े चूल्हे के पास बंक-बेड पर सोते थे. बाकी तीनों सीढ़ियों के नीचे बिना खिड़की वाली एक अलमारी में सोते थे.

बच्चे अपनी माँ से प्यार करते थे, लेकिन वे अपने पिता से बहुत डरते थे. पिता ने अपने बेटों को उतना नहीं पीटते थे जितना कई पिता पीटते थे. लेकिन पिता के भयानक स्वभाव ने फेड़या को छोड़कर सभी लड़कों को बहुत डरपोक और घबराया हुआ बना दिया था. जब वे छोटे थे तो लड़के सुबह ही स्कूल जाते थे. दोपहर के समय उन्हें घंटों खड़े रहना पड़ता था, जबकि उनके पिता ने उनसे स्कूल की पढ़ाई के बारे में पूछताछ करते थे.

उन दिनों रूस में डॉक्टरों का ज़्यादा आदर नहीं किया जाता था, और डॉ. दोस्तोयेव्स्की मानते थे कि उनका हमेशा अपमान ही किया जाता था. इसलिए उन्होंने ठान लिया था कि उनके बेटे उनसे बेहतर बनेंगे.

सर्दियों में उन्हें स्कूल जाने के अलावा कभी बाहर नहीं जाने दिया जाता था, और गर्मियों में वे केवल अपनी बूढ़ी नर्स के साथ अस्पताल के मैदान में घूम सकते थे. कभी-कभी उन्हें रेत में खेलने या घोड़ों पर खेलने की अनुमति दी जाती थी, लेकिन किसी भी प्रकार के लंबे खेल को, उनके लिए बहुत कठिन माना जाता था.

जब तीन बड़े लड़के बोर्डिंग स्कूल गए, तो उनका पिता की गाड़ी ने उनका पीछा किया. बहुत कम अनुभव का जीवन जीने के कारण, उन्हें बदमाशी का बहुत सामना करना पड़ा, और फेड़या को विशेष रूप से खराब भाषा और गलियों से नफरत थी जिन्हें वो अक्सर स्कूल में सुनता था. सौभाग्य से उनका बचपन बहुत दयनीय नहीं था क्योंकि उनकी माँ उन्हें कभी-कभी बाहर ले जाती थीं, और रविवार को उनका भाई उनके लिए अपना गिटार बजाने आता था. तब पापा भी गायन में शामिल हो जाते थे.

उन सभी के लिए सबसे अच्छा समय गर्मियों का होता था. तब वे अपनी मां के साथ गांव चले जाते थे, जबकि उनके पिता मास्को में ही रहते थे. दारोवॉय, गांव में उनका घर, बहुत ही सुंदर था. घर के पीछे "फेड़या की लाश" थी और उसके सामने एक ढलान के नीचे एक खूबसूरत झील थी. जब लड़के मछली पकड़ने जाते, तो वे कीड़े खोजने के लिए गुलाम बच्चों को भी अपने साथ ले जाते, जो मच्छी पकड़ने के उनके काँटों में कीड़े फंसाते थे.

फेड़या 16 साल का था जब उसकी मां की मृत्यु हो गई. उसके बाद पिता ने मास्को छोड़ने और पूरे साल अपने गांव में रहने का फैसला किया, इसलिए उन्होंने फेड़या और उसके सबसे बड़े भाई को एक आर्मी इंजीनियरिंग कॉलेज में भेज दिया. पहले ही साल में उन्हें एक भयानक खबर मिली. घर पर गुलामों ने उनके पिता की हत्या कर दी थी.

फ्योडोर दोस्तोयेव्स्की बड़े होने पर भी कभी खुश नहीं रहे. वो हमेशा अपने बचपन की यादों से त्रस्त रहे और वो अक्सर अपने पिता के बारे में बुरे सपने देखते थे. बाद के जीवन में उन्होंने "द ब्रदर करमाज़ोव" और "क्राइम एंड पनिशमेंट" जैसे कई महान उपन्यास लिखे. उन्होंने अपने कई पात्रों को वास्तविक जीवन के लोगों से लिया.

दोस्तोयेव्स्की के रूस को अब बहुत समय हो बीत चुका है, लेकिन अपनी किताबों में, उन्होंने हमारे लिए उस काल की एक अविस्मरणीय तस्वीर छोड़ी है.

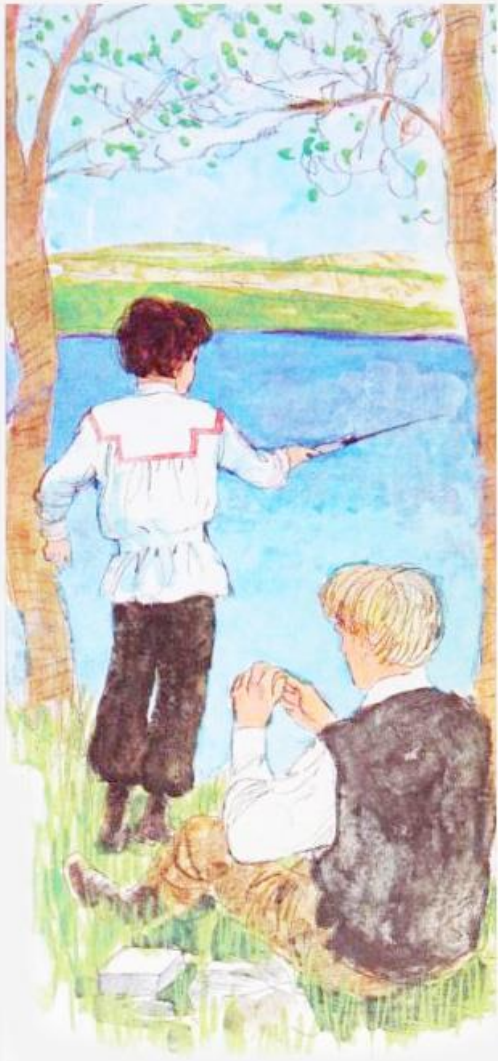

गुलाम बच्चे मछली पकड़ने के हुक में कीड़े फंसाते थे.